ISSN : 2583-2948

अंजुरी में बारिश

डॉ.संजय रामन 'क़ैसर' विद्यावाचस्पति
मनोवैज्ञानिक सलाहकार,
ग़ज़लकार,कवि,चेन्नै, तमिलनाडु
मो॰ - 9841234866

अशांत और अपरिचित
मेरे दिन और रातों में
होती है जब
सुनहरी स्मृतियों की वर्षा
हृदय में....।
अपने जीवन के स्वर्णिम स्मृतियों की
उन निर्मल उनमुक्त बूँदों को
जब भरने लगता हूँ
अपनी चाहत की अंजुरी में,
रिमझिम बारिश की तरह,

तब निर्झर बहने लगते हैं
अंतर्मन के अहसास मेरे,
वो समस्त उनमुक्त कतरे
बन जाते हैं अक्षर और शब्द असंख्य,
धडकनें मेरी बन जाती हैं सरगम।
मन के भावों में अनुरक्त होकर
अधरों पर मेरे,
फूट पड़ते हैं प्रेम के अनंत स्वर
काव्य-आभा
सहसा खिल उठती है हृदय में
ऐसे में.....
कविता लेने लगती है हिलोरे
मन के कोरे कागज़ पर।